14/01/2022

Page No.: 1

Date: / /

Q Difference between culture and personality.
संस्कृति और व्यक्तित्व अंतर

Ans "संस्कृति शब्द की असंदिग्ध परिभाषा देना लगभग असंभव है। यह शब्द जीवन के किसी भी पहलू को संदर्भित कर सकता है। साधारण अर्थ में, संस्कृति एक सभ्य समाज में विशेष रूप से मौजूद हो सकती है, हालांकि वास्तव में स्थिति कुछ अधिक जटिल है। यह याद रखने योग्य है कि किसी भी देश की परंपराओं, आचरण के नियमों के बारे में अपनी विशिष्ट विशेषताएँ हैं। यहाँ तक कि एक आदिम समाज की अपनी संस्कृति है। इस शब्द का उपयोग शहरी और ग्रामीण जीवन के बीच अंतर की परिभाषा के रूप में किया जा सकता है।

संस्कृति और व्यक्तित्व का अटूट संबंध है। यह एक सिक्के के दो पहलू के हो जाता है। यह संस्कृति बनाने वाले लोग हैं, जो बदले में इस पर प्रभाव डालते हैं। यह निरंतर सुधार और अद्यतन करने की एक प्रक्रिया है। व्यक्तित्व संस्कृति की प्रेरक शक्ति है। यह व्यक्ति लगातार समाज और युग की आवश्यकताओं के अनुसार इसमें बदलाव करता है।

बल्कि है संस्कृति एक व्यक्ति के जीवन को आकार देती है, उसे व्यावहारिक सामाजिक बनाती है। यह कुछ नियमों को निर्धारित करता है जिसके बिना कोई भी समुदाय मौजूद नहीं हो सकता है।

संस्कृति और व्यक्तित्व विज्ञान में एक जटिल विषय है, जिसे एक संरचना के रूप में वर्णित किया जा सकता है। व्यक्ति संस्कृति के संबंध में कोई भूमिका निभा सकता है। इन सब पर विचार करें।

व्यक्तित्व संस्कृति का एक उत्पाद है। क्योंकि केवल एक व्यक्ति जिसने अपने समाज की सभी परंपराओं, नियमों, मूल्यों में महारत हासिल की है, वह समाज और अपने समय के लिए पर्याप्त हो सकता है।

एक व्यक्ति संस्कृति के उपभोक्ता के रूप में भी कार्य करता है। यही है, समाज रूप में एक व्यक्ति साथियों के रूप में सबसे अधिक भाषा, आस्था, परंपराओं, मानदंड, मूल्य और वेतन पर आधारित करता है।

एक व्यक्ति संस्कृति का निर्माता है। यह एक ऐसा व्यक्ति है जो सांस्कृतिक मानदंडों को बनाता है, पुनर्व्याख्या करता है, पूरक करता है, सवारता है और व्याख्या करता है।

व्यक्तित्व संस्कृति का अनुवादक है। एक व्यक्ति अपने मूल्यों, पूर्वाभिकताओं, परंपराओं और नियमों को अपने तत्काल वातावरण में स्थानांतरित करता है।

व्यक्ति की संस्कृति व्यक्ति के सफल समाजीकरण के लिए एक आवश्यक तत्व है। बच्चा ज्ञान, नियमों में महारत हासिल करने लगता है, जिसमें माता-पिता उसकी मदद करते हैं। इस प्रकार, एक व्यक्ति अपने समाज में अपनाई गई संस्कृति के लिए पर्याप्त हो जाता है। व्यक्ति सामाजिक भूमिकाओं के एक निश्चित समूह को आत्मसात करता है, एक व्यक्तित्व के रूप में बनता है। उसके बाद ही वह समाज में सफलतापूर्वक कार्य कर पाएगा।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, संस्कृति और व्यक्तित्व दो चीज हैं जो समाजीकरण के लिए आवश्यक है। आइए विचार करें कि जीवन के कौन से क्षेत्र सांस्कृतिक विकास से प्रभावित है।

सबसे पहले, यह मानवीय गतिविधि है। एक व्यक्ति कुछ नियमों और मानदंडों को आत्मसात करने के माध्यम से कौशल सीखता है। इसी समय, मानव संस्कृति किसी भी गतिविधियों का मूल्यांकन करने और

मूल्य निर्धारित करने की क्षमता को प्रभावित करती है।

दूसरी बात, संचार का क्षेत्र। एक व्यक्ति अपनी परंपराओं, नियमों और मानदंडों को जाने बिना किसी विशेष समाज के सदस्यों के साथ बातचीत नहीं कर सकता है।

संस्कृति और व्यक्तित्व साथ की उसकी बातचीत आकार जा सकता है क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण है। इस मामले में किसी का "।" बनना किसी की सामाजिक भूमिका को समझना।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी विशेष संस्कृति है, जो उसके पर्यावरण के प्रभाव में बनती है। बचपन से, एक व्यक्ति सामाजिक मानदंडों, नियमों और परंपराओं में महारत हासिल करना शुरू कर देता है। संस्कृति केवल एक सारा समाज का संकेत नहीं है, बल्कि कुछ समूहों के बीच स्थायी मतभेद के लिए एक शब्द है। यह शहरी या ग्रामीण जीवन की परंपराओं से संबंधित हो सकता है। प्रत्येक व्यक्तिगत देश में मौजूद मानदंडों और नियमों से। इसके अतिरिक्त, उत्पादन भौतिक, बौद्धिक संस्कृति साथ ही साथ इसके कई अन्य प्रकार हैं।

Vijant Kumar Mishra
Asst Professor (Guest Fac)
Dept of Sociology
16/01/2021